Vol 5 Issue 11 Dec 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 3.1560(UIF) Volume - 5 | Issue - 11 | Dec - 2015

Indian Streams Research Journal

दलित मुक्ति के उपाय – गाँधी और अम्बेडकर के संदर्भ में

अशोक अहिरवार
एसोसिएट प्रोफेसर,इतिहास विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर.

ABSTRACT

भारत में जाति व्यवस्था सिर्फ सांस्कृतिक मूल्यों का एक ढाँचा नहीं है। यह जाति अनुक्रम के समानांतर सत्ता और पूँजी के असमान वितरण की संरचना का भी मामला है। जाति व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह की आध्यात्मिक सुन्दरता के प्रशंसकों का भौतिकवादी मांगों की विरूपता भी स्वीकार करना चाहिए। जाति व्यवस्था के साकारात्मक पहलुओं की ओर ध्यान दिलाते हुए अकसर यह दलील दी जाति है कि जातियां अपने सदस्यों को एक पहचान की अनुभूति तो देती है। लेकिन दलितों के दृष्टिकोण से यह तस्वीर बिल्कुल उल्टी है। उन्हें जाति पहचान देने और सुरक्षा प्रदान करने के स्थान पर लगातार उन पर तिरस्कार और अपमान भी थोपती रहती है।

KEYWORDS : संवेदनशीलता, अस्पृश्ता, दलित मुक्ति, आधुनिक राज्य, सामाजिक राजनैतिक अवधारणा।

INTRODUCTION :

दलित मराठी, गुजराती, हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का एक प्रचलित शब्द है। जिसका अर्थ है, गरीब और उत्पीडित। इस शब्द का उपयोग सत्तर के दशक की शुरूआत में बाबा साहेब अम्बेडकर के नव बौद्ध अनुयायियों ने किया था। इस दलित शब्द में अंतनिहित है कि "जिसे तोड़ दिया गया है और जिसे उसके सामाजिक दर्जे से ऊपर बैठे लोगों ने जान-बूज कर नियोजित रूप से कुचल डाला है। इस शब्द में छुआछूत, कर्म सिद्धांत और जातिगत श्रेणीक्रम का नकार निहित है।"[1]

दलित मुक्ति के उपायों तथा वर्ण व्यवस्था के विषय को लेकर बाबा साहेब अम्बेडकर तथा महात्मा गाँधी में गहरे बुनियादी मतभेद थे, परन्तु गाँधी की नियम पर संदेह करना भी उचित नहीं है। यह मात्र परिस्थितियों, चिंतन और संस्कारों के दयारे से उत्पन्न मत भिन्नता थी। अम्बेडकर स्वयं दलित वर्ग में पैदा हुये थे। उनके लिए जातिप्रथा, छूआछूत और उनके साथ जुड़ी सामाजिक विषमता जन्म, अन्याय स्वयं के अनुभव का सत्य था। जबकि गाँधी जी एवं सवर्ण परिवार में पले-बड़े होने के कारण उसके प्रत्यक्ष अनुभव से विरक्त थे।[2] अपने पारिवारिक तथा जातीय दलित संस्कारों के बाद भी गाँधी में गहरी संवेदनशीलता थी, जिस कारण गाँधी में अस्पृश्यता की पीर परायी होकर भी परायी नहीं थी, यह सत्य है कि गाँधी के लिए दलितों का प्रश्न प्राथमिक नहीं था, औपनिवेशिक दासता से मुक्ति उपरान्त वे इसे प्रथम मानते थे। अम्बेडकर स्वतंत्रता के संघर्ष को गौण मानते थे, उनकी दृष्टि में सामाजिक स्वतंत्रता सर्वोपरि थी। भारतीय समाज की अमानवीयता विदेशी शासन से भी ज्यादा भद्दी थी। जिसका खात्मा ब्रिटिश राज के खात्मे से ज्यादा महत्वपूर्ण था, इसलिए जहाँ गाँधी ने सवर्णें अवर्णों के बीच खाई को पाटने का कार्य किया वही अम्बेडकर सवर्णो-अपवर्णो को स्थायी शत्रु मानते थे।[3]

अम्बेडकर के चिंतन में विज्ञाननिष्ठा, आधुनिक पश्चिमी, आर्थिक-राजनैतिक, सामाजिक अवधारणाओं, विचारों संघर्षों की गहरी छाप थी। वे दलितों की समस्या का समाधान प्रजातान्त्रिक शासन के दायरे में राज्य के प्रयोग और उपयोग से करना चाहते थे। जबकि गाँधीजी इन समस्याओं का हल राज्य की मदद के बगैर करना चाहते थे। गाँधी आधुनिकता के खिलाफ थे। जबकि

अम्बेडकर उसके पक्षधर विकास का जो ढाँचा गाँधी की कल्पना में था। उसमें गाँवों को एक स्वतंत्र, स्वायत्त इकाई के रूप में भारतीय राज्य का आधार स्तंभ माना गया था, जबकि अम्बेडकर लोकतांत्रिक, आधुनिक राज्य की अवधारणा में विश्वास रखते थे, और नागरिक समानता के आधार पर आधुनिक जनतंत्र के पैरोकार थे।[४] उन्हें डर था कि यदि भारत में ग्रामों की स्थापित व्यवस्था को बरकार रखा गया तो दलितों को अपमान, अन्याय और अमानुषिक व्यवहार से कभी मुक्ति नहीं मिल सकेगी। जीवन के आखिरी वर्षों को छोड़कर गाँधी आजीवन वर्ण–व्यवस्था का समर्थन करते रहे। उनके अनुसार वर्णाश्रम धर्म और अस्पृश्यता में कोई सम्बन्ध नहीं है। इसलिए हिन्दू धर्म की अपनी उदारवादी परिकल्पना के भीतर ही समाज परिवर्तन के लिए उन्होंने अस्पृश्यों के लिए सामाजिक तथा राजनैतिक अधिकारों का संघर्ष छेड़ने के स्थान पर, सवर्णों में पाप बोध जगाने, आत्मशुद्धि द्वारा हृदय परितर्वन पर जोर दिया। वे अछूतों के हिन्दू समाज से अलग होने की बात से सहमत नहीं थे। और इसीलिए उन्होंने मुसलमानों और सिखों को तो अल्पसंख्यक होने के कारण विशेष अधिकार देना स्वीकार कर लिया परन्तु हरिजनों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल बनाने के विरोध में आमरण अनश्न पर बैठ गये। इसके विपरीत डॉ. अम्बेडकर इससे संतृष्ट नहीं थे। वे प्रतीकात्मकता के स्थान पर स्थायी संस्थागत आधार चाहते थे। इसीलिए डॉ. अम्बेडकर के लिए भारत में ब्रिटिश राज सबसे बड़ा शैतान नहीं था। इन्होंने हमेशा माना कि "उनका मिशन दलितों को ब्राह्मणवाद और जातिवाद से मुक्त करना है। रेल मजदूरों को सम्बोधन करते हुये १९३८ में उन्होंने कहा कि मजदूरों को दो शत्रुओं से लड़ना है। ब्राह्मणवाद और पूँजीवाद ब्राह्मणवाद से उनका तात्पर्य एक समूह विशेष से नहीं था, उनका अभिप्राय था, कि स्वतंत्रता, समानता और भाई चारे की भावना का निषेध ही ब्राह्मणवाद है यह केवल ब्राह्मण जाति में नहीं है। यह बुराई सभी वर्गों में है, यद्यपि इसकी शुरूआत ब्राह्मणों ने की।"[५]

अपनी राष्ट्रवादी संघर्ष की प्राथमिकता के साथ अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष की महत्ता कम न होने देने के बाबजूद अस्पृश्यता के प्रति गाँधी का दृष्टिकोण मूलतः धार्मिक और आध्यात्मिक था और जिसका निवारण "आत्मा" के आध्यात्मिक रूपांतरण में निहित था। किन्तु दलितों की समस्या मात्र छुआछूत की समस्या नहीं है। अम्बेडकर की यह मान्यता थी कि जब तक जाति व्यवस्था का सफाया नहीं हो जाता, छुआछूत को मिटाया नहीं सकता। अम्बेडकर से वैचारिक संघर्ष के बाद जाति के प्रश्न पर गाँधी काफी बदल गये। सन् १९३५ में उन्होंने घोषणा की थी कि जाति प्रथा को समाप्त होना ही होगा और अंतरजातीय विवाहों और भोजो को मान्यता दे दी। किन्तु वर्ण व्यवस्था के प्रश्न पर चुप्पी साध गये। गाँधी ने अंग्रेजी शासन को "शैतानी" जैसे शब्दों से सम्बोधित किया था, परन्तु जाति व्यवस्था के प्रश्न को इतने कटे शब्दों का उपपयोग करने से उन्होंने हमेशा परहेज किया। भारत में जाति व्यवस्था सिर्फ सांस्कृतिक मूल्यों का एक ढाँचा नहीं है। यह जाति अनुक्रम के समानांतर सत्ता और पूँजी के असमान वितरण की संरचना का भी मामला है। जाति व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह की आध्यात्मिक सुन्दरता के प्रशंसकों का भौतिकवादी मांगों की विरूपता भी स्वीकार करना चाहिए। जाति व्यवस्था के साकारात्मक पहलुओं की ओर ध्यान दिलाते हुए अकसर यह दलील दी जाति है कि जातियां अपने सदस्यों को एक पहचान की अनुभूति तो देती है। लेकिन दलितों के दृष्टिकोण से यह तस्वीर बिल्कुल उल्टी है। उन्हें जाति पहचान देने और सुरक्षा प्रदान करने के स्थान पर लगातार उन पर तिरस्कार और अपमान भी थोपती रहती है।[६] गाँधी को जाति व्यवस्था के 'सघटक नियमों' में कोई कमी नहीं दिखती थी। उनके अनुसार गड़बड़ी उन्हें लागू करने में थी जिसे एक शक्तिशाली आन्दोलन सुधार सकता है। अस्पृश्यता निवारण और दलित मुक्ति के गाँधी माडल में कई मूलभूत दिक्कते थी। आत्मशुद्धि को एक पवित्र रस्म के रूप में देखे जाने के कारण सवर्ण –हिन्दू के 'स्व' पर एक बड़ी नैतिक जिम्मेदारी आ गयी थी। इस कारण एक नैतिक प्रभामंडल बन जाता था जो हरिजनों को अभिभूत कर देता है। अपराध बोध से ग्रस्त हिन्दु 'स्व' को प्रायश्चित के लिए अछूतों की आवश्यकता थी। सवर्ण हिन्दू सुधारक के इस नायकत्व ने हरिजन के व्यक्तित्व को और बौना कर कर दिया। हिन्दू सुधारक और हरिजनों का रिश्ता अभिभावक–संरक्षक का होकर रह गया। गाँधी के अछूतोद्धार के कार्यक्रम से कृतज्ञ एक नेतृत्व जरूर उभरा लेकिन वह बेहद नरम–दब्बू और खुशामदी था। संघर्ष हेतु आत्म सम्मान उनके पास नहीं था। ऐसा नेतृत्व सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना को वास्तवित चुनौती नहीं दे सकता था। यह एक ऐतिहासिक सच है कि अधिसंख्य दलितों के लिये हिन्दुओं में हृदय परिवर्तन की संभावना कारगर साबित नहीं हुई। अगर हृदय परिवर्तन ही भेदभाव खत्म करने का सशक्त हथियार होता तो कानून–न्यायालय और दंड संहिता की जरूरत ही क्यों पड़ती ? हजारों सालों की मानसिकता का केवल धार्मिक–नैतिक उपदेशों से नहीं बदला जा सकता। इसके लिये आवश्यक है कि जिनके पक्ष में कानून बने हैं वह स्वयं सजग हो कर उन्हें लागू करवाने का प्रयास करे। इस दृष्टि से अंबेडकर द्वारा दलितों को सशक्त और संघर्षशील बनाने का प्रयत्न ही उचित जान पड़ता है। जाति और वर्ण व्यवस्था के विरोधी अंबेडकर और समर्थक गाँधी के बीच चले लंबे विवाद में सच्चाई और विवेक अंबेडकर की तरफ था।[८]

अंबेडकर की दूरदृष्टि और विवेक शक्ति की प्रशंसा के लिये यही आधार काफी है कि गाँधी जी ने अपने अंतिम वर्षों में अपनी पुरानी मान्यताओं को बदल डाला।[७] उन्होंने न सिर्फ अन्तरर्जातीय विवाहों के जबरदस्त समर्थन किया बल्कि हरिजनों और सवर्णों के बीच अवर्णो के और सबसे आश्चर्यजनक बात अंतर्धर्मीय विवाहों के भी बशर्ते कि ऐसे विवाहों में स्वतः सिद्ध या अनिवार्य धर्म परिवर्तन न हो। ३१ मार्च १९४५ को गाँधी जी ने वर्ण व्यवस्था नामक लेख संग्रह की भूमिका लिखी जिसमें उन्होंने लिखा कि "मनुष्य हर रोज आगे बढ़ता या पीछे हटता है। वह एक जगह खड़ा नहीं रहता सारा विश्व गतिमान है। इस नियम का कोई अपवाद नहीं है। मेरा यह वक्तव्य गलत होगा। अगर मैं कहूँगा कि मैं आज वही हूँ जो कल था और भविष्य में भी वहीं रहूंगा। वस्तुतः मेरे मन में इस तरह की इच्छा भी नहीं होनी चाहिये। सत्य और अहिंसा के बारे में मेरी कल्पना दिन–प्रतिदिन स्पष्टतर होती जा रही है। तथापि यह कहना सही नहीं होगा कि वर्णाश्रम के संबंध में मेरे विचार वही है जो पहले थे।"[९]

इस प्रकार दलित मुक्ति के प्रयासों के प्रश्न पर महात्मा गाँधी के विचारों में परिवर्तन लाने में बाबा साहेब अंबेडकर सफल रहे। यह दूसरी बात है कि अपने मत परिवर्तन का श्रेय गाँधी जी ने अंबेडकर को न दिया हो। यह भी सत्य है कि परवर्ती इतिहास ने

यह साबित कर दिया कि जातियों की आधारभूत पहचान अस्पृश्यता आज भले न रही हो, किन्तु उसने नयी पहचान बना ही और आज भी भारतीय राजनीति पर जातिगत विग्रहों का भारी असर है। दलित मुक्ति का पूरा समाधान तब तक संभव नहीं है। जब तक गैर दलित समाज का क्रांतिकारी रूपांतरण न हो तथा दलित वर्ण को आर्थिक रूप में सक्षम नहीं बनाया जाये।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. अभय कुमार दुबे, संपादित– आधुनिकता के आइने में दलित, वाणी प्रकाशन, संस्करण २००५, पृ. १६६,
२. अरविन्द कुमार 'बिन्दु' एवं डॉ. ताराचंद, डॉ. अंबेडकर एक क्रांतिकारी व्यक्तित्व, प्रकाशक– अंबेडकर पुस्तकालय, जौनपुर, १६६४, पृ. ४८
३. प्रतिपक्ष, अप्रैल, १६६१, नई दिल्ली, पृ. २७
४. आलोक टंडन, विकल्प और विमर्श, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ. ५६
५. जनसत्ता, ७ मई, २००८, नई दिल्ली
६. आलोक टंडन, वही पृ. ६१
७. मधु लिमये, डॉ. अंबेडकर एक चिंतन, सरदार वल्लभ भाई पटैल, एजूकेशनल सोसयटी, नई दिल्ली, पृ. ३१
८. वही, पृ. ३६
६. वही, पृ. ३६

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org